# कविता में दिल्ली

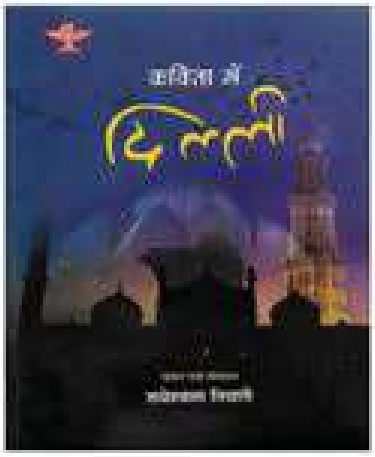

✍... मनोज मोहन

**पुस्तक :** कविता में दिल्ली
**चयन एवं संपादन:** राधेश्याम तिवारी
**प्रकाशन :** साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
**मूल्य :** ₹280

राधेश्याम तिवारी के चयन और संपादन में 'कविता में दिल्ली' संग्रह को साहित्य अकादेमी ने प्रकाशित किया है। अपने समय के प्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय दिल्ली की सबसे बड़ी देन परदेसीपन को मानते थे। इस शहर में एक अजब तरह का स्निग्ध एकांत है जिसमें जब चाहो तब भीतर चले आओ, चाहे कितनी भीड़ में क्यों न हो, और जिसमें से जब चाहो थोड़ी देर के लिए बाहर आ जाओ, कोई देखेगा नहीं। इसी संग्रह की अपनी कविता में अशोक वाजपेयी कहते हैं–'कल भी हर तरफ चहल-पहल, गहमागहमी थी/उस सड़क पर भी जिस पर पिछली रात/एक आदमी मरा था।'

संग्रह की छब्बीस पृष्ठों की सारगर्भित भूमिका का शीर्षक दिल, दिल्ली और दर्द है। छियानवे कवियों की दिल्ली पर कविताओं को इकट्ठा करना सोलह आने मुश्किल भरा काम था। इस संग्रह के तीन खंड हैं–पूर्व, मध्य और उत्तर राग। गालिब कवि रूप में मौजूद नहीं हैं लेकिन उनकी याद में हाली की लिखी कविता है। जगनिक और जायसी के साथ कुल चार और कवि पूर्व राग में शामिल हैं। मध्य राग में अट्ठाईस कविताएं हैं तो उत्तर राग में कुल पचास। संग्रह-संपादक का मानना है कि दिल्ली के खंडहर और ऐतिहासिक धरोहर जहां एक ओर अपने अतीत की स्मृतियों को संजोए हुए होते हैं, वहीं इनसे दिल्ली के वर्तमान को बेहतर बनाने की प्रेरणा भी मिलती है।

आजादी के बाद कवियों की उम्मीद सिर्फ जीविका, नौकरी की संभावना भर की नहीं थी, एक बनते महानगर, एक नई बनती राजधानी के बहाने आधुनिक जीवन की संश्लिष्टताओं को पहचानने की उम्मीद भी थी। इस उम्मीद पर संग्रह के कई कवि खड़े उतरते हैं। लेकिन यह भी देखने को मिलता है कि राजधानी और महानगर के द्वंद्व में फंसे व्यक्ति का अकेलापन बढ़ता गया है और वह पूरे परिदृश्य से कटा अलग खड़ा नजर आता है। रघुवीर सहाय अपनी कविता में कहते हैं–एक झीना-सा पर्दा था दोनों के बीच/ लोगों के और मौसम के/ मैंने उसे हटा दिया/ कालातीत समय चारों ओर से घिर आया। असद जैदी अपनी कविता दिल्ली दर्शन में कुछ एक पंक्तियों के साथ एक चित्र उपस्थित करते हैं, क्या करते हैं आप लोग/ हम लोग एक नये किस्म का/ समाज बनाते हैं/ फिलहाल के लिए/ और इस पूछताछ से आजिज आ जाते हैं।

इस संग्रह में अनामिका कहती हैं–मैं देहली–एक सनातन स्त्री–/ किसी भी पहुंच के परे/ सात झिल्लियां एक झिल्ली के भीतर ज्यों–/ सात आसमां मेरे भीतर मंदिर में नाचते हुए!

वहीं भगवत रावत अपनी लंबी कविता 'कहते हैं कि दिल्ली की है कुछ आबो हवा और' का समाहार इन पंक्तियों से करते हैं–सिर्फ इस सबके बावजूद / मैं जो कुछ कह रहा था /दिल्ली के बारे में ही कह रहा था। मात्र इन तीन पंक्तियों से आप पूरी कविता के मर्म तक पहुंच जाते हैं। आज भी मजीद अहमद की यह कविता पंक्ति 'लाल किला से दूर नहीं थी यमुना / दिखते थे रिज के जंगल में नाचते हुए मोर' दिल्ली का एक भौगोलिक चित्र खींच देता है लेकिन वह स्मृतियों के जंगल में धुंधली याद भर है।

कहने को यह कह सकते हैं कि दिल्ली का दिल बहुत बड़ा है लेकिन इसका दर्द भी कुछ कम नहीं। इसकी धड़कनों से देश की दशा का अंदाजा होता है। इस संग्रह की सारी कविताएं मनुष्यों की बुनियादी मानवीय भावनाओं को सिर्फ पुनर्परिभाषित ही नहीं करती, बल्कि उसको, जीवन-संघर्ष झेलने का साहस भी देता है। यह जरूर है कि संग्रह के अधिकांश कवि इस महानगर दिल्ली में देश के विभिन्न हिस्सों से आकर बसे हैं, कुछ कवि आते-जाते शहर में हुए अपने अनुभव को कविता में ढाल गये हैं। इस बड़े दिल में उर्दू कवियों की पर्याप्त समाई नहीं हो पायी है। इसे संग्रह पर एक कमी मान सकते हैं।